

Ranjan Biswas (West Bengal), Dr. Santanu Sen (West Bengal), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shrimati Vandana Chavan (Maharashtra), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Dr. Amar Patnaik (Odisha), Prof. Manoj Kumar Jha (Bihar) and Shrimati Phulo Devi Netam (Chhatisgarh).

The next speaker is Dr. Anil Sukhdeorao Bonde; demand to install centralised solar dryer system in the District of Amravati to dry medicinal plants.

**Demand to install centralised Solar Dryer System to dry medicinal plants in Amravati District**

**डा. अनिल सुखदेवराव बोंडे (महाराष्ट्र) :** महोदय, अमरावती जिले में पिंपरी की लताएं लगाकर, इस पिंपरी औषधीय पौधे की खेती लंबे समय से की जाती रही है। यह वर्ष में एक बार होने वाली फसल है। यह बेल जनवरी माह में लगाई जाती है। इस बेल के लिए हेटा या पांगारा सहायक वृक्ष लगाए जाते हैं। कई बार इस पिंपरी के फलों को निकालने के बाद धूप में सुखाया जाता है, लेकिन बेमौसम बारिश से नुकसान की संभावना होती है। इस साल बेमौसम बारिश के कारण कटी हुई पिंपरी गीली हो गई, उस पर फंगस आ गई, जिससे यह औषधीय वनस्पति, पिंपरी किसी काम की नहीं रही। पिंपरी की वैली को यंत्र के माध्यम से सुखाया जाए, तो प्राकृतिक खतरे से बचा जा सकता है। आम तौर पर, 150 से 250 हेक्टेयर पर पिंपरी का उत्पादन होता है और इसे पूरे देश में आयुर्वेदिक औषधि के रूप में यूटिलाइज़ किया जाता है। सौर ऊर्जा आधारित सुखाने की मशीन से इसका बचाव किया जा सकता है। इस पिंपरी बेल के आधार के लिए हेटा और पांगारा वृक्ष लगाए जाते हैं। इसके पत्ते को जानवरों के खाद्य के रूप में उपयोग में लाया जाता है, लेकिन कुछ सालों से पांगारा के ऊपर बुरशीजन्य बीमारियाँ आ रही हैं, जिनकी वजह से ये पांगारा के वृक्ष विकसित नहीं होते हैं। उनका परिणाम पिंपरी के ऊपर भी होता है। पिंपरी वैली के ऊपर भी मर बीमारी का प्रादुर्भाव ज्यादा हो रहा है तथा वायु-जल परिवर्तन के कारण पिंपरी के उत्पाद के ऊपर भी बहुत से परिणाम देखने को मिल रहे हैं, इसलिए सरकार से विनती है कि औषधि वनस्पति, पिंपरी पर आने वाला मर रोग, आधार वृक्ष हेटा और पांगारा पर आने वाली बुरशीजन्य बीमारियाँ तथा वायु-जल के परिवर्तन से होने वाले नुकसान के लिए अधिक संशोधन किया जाए। इसके साथ ही, पिंपरी औषधि को वायु-जल के परिवर्तन पर आधारित बीमा में अंतर्भूत किया जाए, ताकि औषधि वनस्पति का उत्पादन करने वाले किसान, जो परंपरागत पिंपरी का उत्पादन कर रहे हैं, उन्हें संरक्षण मिल सके। इसका जो उपयोग आयुर्वेद में हो रहा है, वह निरंतर रहेगा और किसानों को होने वाले नुकसान को संरक्षित करने वाले बीमा के माध्यम से किसानों को बचाया जा सकेगा। मैं सरकार से अनुरोध करता हूँ कि अमरावती जिले में पिंपरी औषधीय पौधों-फलों की कटाई के बाद में सुखाने के लिए एक अभिनव योजना के रूप में सुखाने का सौर केन्द्र, सोलर ड्रायर शुरू करें और पिंपरी हवामान आधारित बीमा योजना में अंतर्भूत करें, धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the Zero Hour mention raised by the hon. Member, Dr. Anil Sukhdeorao Bonde: Dr.

Santanu Sen (West Bengal), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Dr. Sasmit Patra (Odisha) and Dr. Amar Patnaik (Odisha).

---

### ANNOUNCEMENT BY THE CHAIR

**श्री उपसभापति :** मैं अगले माननीय सदस्यों को आमंत्रित करूँ, उससे पहले माननीय सदस्यों के लिए एक सूचना है। Hon. Members, as you are aware, the Short Duration Discussion on the 'Economic Situation in the country' was not concluded yesterday. Considering the interest generated, it has been decided to allow the hon. Members, who wish to participate in the discussion, to give their names to the Table office through their party leader/whip by 1 p.m. today.

---

### MATTERS RAISED WITH PERMISSION - *Contd.*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The next speaker is Dr. Sikander Kumar; concern over insufficient supply of electricity in Pangri Valley of Himachal Pradesh.

#### Insufficient supply of electricity in Pangri Valley of Himachal Pradesh

**डा. सिकंदर कुमार** (हिमाचल प्रदेश) : माननीय उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से इस सदन का ध्यान जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश की पांगी घाटी में विद्युत आपूर्ति की कमी के ऊपर दिलाना चाहता हूँ। आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी पांगी घाटी जनजातीय क्षेत्र में विद्युत की कमी है। घरों की जनसंख्या करीब 25 हजार है तथा विद्युत आपूर्ति 950 किलोवाट है, जबकि घाटी की जरूरत लगभग 11-12 मेगावाट की है।

(सभापति महोदय पीठासीन हुए।)

उपरोक्त 950 किलोवाट भी करीब 12 वर्ष पहले बहाल की गई थी, लेकिन आज दिन तक इस संदर्भ में कोई सकारात्मक पहल नहीं की गई है। साच-पास होकर 33 किलोवाट लाइन, जिसका कुछ खंड भूमिगत स्वीकृत था, लेकिन करीब आठ वर्षों से उपरोक्त कार्य बंद पड़ा है। विश्वस्त सूत्रों से मालूम हुआ है कि उक्त 33 किलोवाट पर करीब 35 करोड़ खर्च हो गए, लेकिन न तो संबंधित ठेकेदार को ब्लैकलिस्ट किया गया है और न ही आज तक उक्त 33 किलोवाट को पुनः आरंभ किया जा सका है। विद्युत बोर्ड बिल्कुल मौन है। घाटी में करीब आठ नाले तथा चंद्रभागा नदी